अनुक्रम

विभाग : एक

१. जैन भक्ति : प्रवृत्तियाँ १-३१

'निष्कल' और 'सकल'–१, दिव्य अनुराग–२, रहस्यवाद–४, सतगुरु–६, ब्रह्मकी प्रेरणा–७, पंचकल्याणक स्तुतियाँ–९, दास्यभाव–१०, आराध्य-की महत्ता–११, कीर्त्तन–१४, स्मरण–१६, दर्शनकी महिमा–१७, भक्तिसे अंगोंकी सार्थकता–२०, भक्तिके लिए मनको चेतावनी–२२, बावनी और शतक आदिमें जैन भक्ति–२४, रूपकोंमें भक्ति–२६, जैन भक्तिके विशाल स्तम्भ : प्रबन्ध काव्य–२८, जैन भक्तिकी शान्ति-परकता–२९ ।

२. जैन भक्त कवि : जीवन और साहित्य ३२-३६४

१. राजशेखरसूरि–३२, २. सधारु–३४, ३. विनयप्रभ उपाध्याय–३७, ४. मेरुनन्दन उपाध्याय–४२, ५. विद्धणू–४७, ६. सोमसुन्दर सूरि–५०, ७. उपाध्याय जयसागर–५२, ८. हीरानन्द सूरि–५४, ९. भट्टारक सकलकीर्त्ति–५६, १०. श्री पद्मतिलक–५८, ११. ब्रह्म जिनदास–५९, १२. मुनि चरित्रसेन–६४, १३. लावण्यसमय–६५, १४. संवेगसुन्दर उपाध्याय–६८, १५. ईश्वरसूरि–६९, १६. चतरुमल–७१, १७. भट्टारक ज्ञानभूषण–७३, १८. भट्टारक शुभचन्द्र–७७, १९. विनयचन्द्र मुनि–८०, २०. कवि ठकुरसी–८३, २१. विनयसमुद्र–८८, २२. कवि हरिचन्द–९०, २३. देवकलश–९२, २४. मुनि जयलाल–९३, २५. भट्टारक जयकीर्त्ति–९४, २६. श्री क्षान्तिरंगगणि–९५, २७. श्री गुणसागर–९६, २८. बूचराज–९७, २९. छीहल–१०१, ३०. भट्टारक रत्नकीर्त्ति–१०७, ३१. ब्रह्म रायमल्ल–११०, ३२. कुशललाभ–११५, ३३. साधुकीर्त्ति–१२१, ३४. हीरकलश–१२२, ३५. पाण्डे जिनदास–१२५, ३६. त्रिभुवनचन्द्र–१२८, ३७. कुमुदचन्द–१३०, ३८. कवि परिमल्ल–१३५, ३९. वादिचन्द–१३७, ४०. गणि महानन्द–१४०, ४१. मेघराज–१४२, ४२. सहजकीर्त्ति–१४४, ४३. ब्रह्मगुलाल–१४६, ४४. उदयराज जती–१५०, ४५. हीरानन्द मुकीम–१५४, ४६. हेमविजय–१५६,

४७. नन्दलाल–१५८, ४८. कवि सुन्दरदास–१६१, ४९. पं० भगवती, दास–१६४, ५०. पाण्डे रूपचन्द–१६८, ५१. हर्षकीर्त्ति–१७४, ५२. कनककीर्ति–१७६, ५३. कवि बनारसीदास–१७८, ५४. मनराम–१९३, ५५. कुँअरपाल–१९७, ५६. यशोविजयजी उपाध्याय–१९९, ५७. महात्मा आनन्दघन–२०४, ५८. जगजीवन–२११, ५९. पाण्डे हेमराज–२१४, ६०. पं० मनोहरदास–२१९, ६१. लालचन्द लब्धोदय–२१४, ६२. पं० हीरानन्द–२२८, ६३. रायचन्द–२३०, ६४. जिनहर्ष–२३३, ६५. अचलकीर्त्ति–२३९, ६६. रामचन्द्र–२४२, ६७. जोधराज गोधीका–२४७, ६८. जगतराम–२५१, ६९. विश्वभूषण–२५८, ७०. जिनरंग-सूरि–२६४, ७१. भैया भगवतीदास–२६८, ७२. शिरोमणिदास–२७६, ७३. द्यानतराय–२७८, ७४. विद्यासागर–२८७, ७५. बुलाकीदास–२९०, ७६. विनय विजय–२९३, ७७. देवाब्रह्म–२९५, ७८ सुरेन्द्रकीर्त्ति मुनीन्द्र–२९८, ७९. खेतल–३००, ८०. भाऊ–३०३, ८१. लक्ष्मीवल्लभ–३०७, ८२. विनोदीलाल–३११, ८३. बिहारीदास–३२२, ८४. किशन-सिंह–३२७, ८५. खुशालचन्द काला–३३३, ८६. भूधरदास–३३५, ८७. निहालचन्द–३४९, ८८. पं० दौलतरामजी–३५२, ८९. भवानी-दास–३५६, ९०. अजयराज पाटणी–३५७।

विभाग : दो

३. जैन भक्ति-काव्यका भाव-पक्ष ३६७–४१३

सख्यभाव–३६७, वात्सल्यभाव–३७१, प्रेमभाव–३८१, आध्यात्मिक विवाह–३८५, तीर्थंकर नेमीश्वर और राजुलका प्रेम–३८७, बारहमासा–३८९, आध्यात्मिक होलियाँ–३९१, विनयभाव–३९७, दीनता–४०१, लघुता–४०२, शान्तभाव–४०९।

४. जैन भक्ति-काव्यका कला-पक्ष ४२०–४५७

भाषा–४२०, वि० सं० १६००-१८०० के जैन हिन्दी कवियोंकी भाषा–४२९, छन्द-विधान–४३५, अलंकारयोजना–४४५, प्रकृति-चित्रण–४५१।

५. तुलनात्मक विवेचन ४५८-४९७

निर्गुणोपासना और जैन-भक्ति–४५८, जैन आराधना और सगुण भक्ति–४८०।

परिशिष्ट :

६. हिन्दीके आदिकालमें जैन भक्तिपरक कृतियाँ ४९९-५०५